Rayat Shikshan Sanstha's

Prof. Dr. N. D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur-Perid

Tal. Shahuwadi, Dist. Kolhapur-415101

(Affiliated to Shivaji University, Kolhapur, NAAC Reaccredited -'B' Grade with CGPA-2.82)

ONE DAY

INTERDISCIPLINARY NATIONAL CONFERENCE ON

The Impact of Globalization on Languages, Literature, Education, Social Sciences Library, Environment, Sports and Games

Saturday, 17th March, 2018

Certificate

This is to certify that Prin./Dr./Prof./Mr./Ms. संदीप जोतीराम किर्दत of चंद्राबाई, शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज हुपरी has participated in One Day nterdisciplinary National Conference on "The Impact of Globalization on Languages, Literature, ducation, Social Sciences, Library, Environment, Sports and Games" organized by Faculty of Arts nd Internal Q uality Assurance Cell of Prof. Dr. N. D. Patil Mahavidyalaya, Malkapur-Perid on aturday, 17th March 2018. He/She has Attended/Chaired a session / Presented a research paper ntitled 'कयास्पर्श' उपन्यास में प्रतिबिंबित भूमंडलीकरण

Dr. Anil Ubale	Prof. Sachin Chavan	Prin. Dr. Sunil Kamble
Coordinator	Organizing Secretary	Convener

डॉ. संदीप किर्दत

९८

Interdisciplinary National Level Conference 17 th Mar.2018
Special Issue On Impact of Globalization on Language, Literature, Education, Social Sciences, Library, Environment, Sports And Games

Organised By	Rayat Shikshan Sanstha's Prof.Dr.N.D.Patil Mahavidyalaya,Malkapur(Perid)	ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

'कायास्पर्श' उपन्यास में प्रतिबिंबित भूमंडलीकरण

प्रा. डॉ.संदीप जोतीराम किर्दत
सहायक प्राध्यापक ,हिंदी विभाग,
चंद्राबाई-शांताप्पा शेंडुरे कॉलेज,हुपरी

प्रस्तावना -

अंग्रेजी ळसवइंसप्रंजपवद का हिंदी रुपांतर भूमंडलीकरण है। हिंदी में अंग्रेजी ळसवइंसप्रंजपवद के लिए भूमंडलीकरण के साथ वैश्वीकरण, विश्वायन, जगतीकरण जैसे शब्दों का प्रयोग भी किया जाता है। भूमंडलीकरण के संदर्भ में संतोष डेहरिया के विचार स्पष्ट हैं-''वैश्वीकरण विश्व स्तर पर क्रियाशील एक ऐसी प्रक्रिया है जो समय और स्थान की सीमाओं को तोड़ते हुए व्यक्तियों को अन्योन्याश्रितता और अन्तर्पारस्परिक,संबंधों में बाँधती है। यह वैश्वीक स्तर पर आंदोलनों एवं घुलन मिलन की एक प्रक्रिया है।''[१] डेहरिया जी के विचार भूभाग की सीमा लाँघकर किए जानेवाले व्यवहार का संकेत करते हैं। भूमंडलीकरण के संदर्भ में मेरी विनम्र धारणा है कि हर दायरे से ऊपर उठकर मनुष्य का आर्थिक,सामाजिक तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान वैश्वीकता का प्रमुख स्वर है। बाजारवाद का स्वीकार कर हर संभव अन्य देशों की अर्थव्यवस्था से जूड़ने की प्रक्रिया भूमंडलीकरण है। इसमें अन्य देशों से जुड़ने के लाभ कम हैं और हानियाँ अधिक हैं। हानि का सुस्पष्ट स्वरूप अधिकत्तर मूल्य विघटन के स्तर पर दृष्टिगोचर होता है। भौतिक सुख के चक्कर में मोहभंगित और पथभ्रष्ट पीढी भूमंडलीकरण की देन है। भारतीय समाज में नजर आते वैश्वीकरण के परिणामों के संदर्भ में डॉ.अनु मेहता जी के विचार दृष्टव्य हैं- ''वस्तुतः ऐसा बाजार जन्म ले चुका है। जिसके केंद्र में घोर स्वार्थ व्यक्तिवादिता तथा अर्थकेंद्रिता है।...समाज की संरचना में बहुत बडा विघटन आया है।''[२] भारत में वैश्वीकरण की संभावना १९८० में शुरु हुई,जो १९९१ में भारत सरकार ने स्वीकृत की खुली अर्थव्यवस्था के कारण उसे अधिक गति प्राप्त हुई। वैश्वीकरण के साथ दुनिया में जो कुछ परिवर्तन की लहर आई है उससे भारतीय समाज जीवन भी अछुता नहीं रहा है। साहित्य क्षेत्र भी इसे अपवाद नहीं है। अर्थकेंद्रित व्यवहार, भौतिक सुखों की लालसा, यंत्रवत जीवन, जीवन-मूल्यों की अपेक्षा बाहरी ताकझाक को महत्व आदि जैसे भारतीय समाज जीवन में नजर आते परिवर्तन हिंदी साहित्य के विषय बने हैं। अतः प्रस्तुत प्रपत्र में द्रोणवीर कोहली कृत 'कायास्पर्श' उपन्यास में प्रतिबिंबित भूमंडलीकरण का विवेचन-विश्लेषण किया है।

'कायास्पर्श' उपन्यास में प्रतिबिंबित भूमंडलीकरण -

उपन्यासकार द्रोणवीर कोहली का सन १९८७ में राजपाल एंड संज से प्रकाशित लघु-उपन्यास 'काया स्पर्श'है। बाजारीकरण का प्रभाव हर क्षेत्र पर हुआ है। हर चीज बेचने की और खरीदने की बनी है। मानव सेवा, रिश्ते-नाते की अपेक्षा रूपया महत्वपूर्ण बना है। परिणामतः भौतिक साधनों के धकापेल में जीवन मूल्यों का विघटन चिंता एवं चिंतन का विषय बना है। एक जमाना था जब मनुष्य स्वास्थ्य तथा परिवार को जीवन की अमूल्य पूंजी मानता था। आज मात्र दिखावाभरा प्रेम दृष्टिगोचर होता है। विज्ञान तकनीकी और खुली अर्थव्यवस्था से दुनिया नजदीक आ गई है;पर मनुष्य के बिच आपसी प्रेम की गरीमा कम हुई है। विशेषतः अमीरों की रूपयों की दुनिया में प्रेम शेष नहीं रहा है। रोगी की सेवा तो दूर की बात पर रोगी को मानसिक आधार देने के लिए भी व्यक्ति के पास समय नहीं है। 'काया स्पर्श' उपन्यास के व्यवसायी सुगति के पास परिवार के सदस्यों के लिए समय नहीं है। सुगति का छोटा लड़का होस्टल में पढ़ता है तो पारिवारिक प्रेम के अभाव में मंझला लड़का इच्छु मनोरूग्ण बना है। वह अपने कमरे में पड़ा रहता है। विमाता मृणाल इच्छु को बोझ मानती है। अमीर सुगति डॉ. कुलश्रेष्ठ के निर्देशन के अनुसार इच्छु की केस डॉ. काया को सौंपाते हैं। उनके हृदय में बेटे के प्रति प्रेम नही है। डॉ. काया सुगति की कोठी पर मनोरूग्ण इच्छु को मिलने जाती है तो सुगति की भौतिक साधनों से लैस कोठी देखकर चकित होती है। काया देखती है कि इच्छु के पास पामोलियन कुत्ते के सिवा कोई नहीं है। परिवार से अधिक व्यवसाय को महत्त्व देनेवाले सुगति बेटे का इलाज रुपयों के बुते करना चाहते हैं। वे इच्छु का केस सँभालनेवाली डॉ. काया को प्रति घंटा अस्सी रुपये देते हैं।डॉ. काया यथायोग्य इलाज के लिए इच्छु का पूर्व इतिहास जानना आवश्यक मानती है। मात्र सुगति डॉ. काया की बात अनसूनी कर डॉ. काया की फीस बढ़ाने की बात करते हैं।

Organised By	Rayat Shikshan Sanstha's Prof.Dr.N.D.Patil Mahavidyalaya,Malkapur(Perid)	ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

अपमानित डॉ. काया संयतता से कार्य करती है। डॉ. काया सुगति को समझाती है कि इच्छु को दवा की अपेक्षा प्रेम और सहानुभूति की आवश्यकता है। इच्छु के मामा से पता चलता है कि इच्छु के माता-पिता ने प्रेमविवाह किया है और कोई रिश्तेदार उनकी कोठी पर नहीं आते। धीरे-धीरे इच्छु डॉ. काया के अनुराग पर विश्वास कर सामान्य व्यवहार करने लगता हैं। डॉ. काया अपने प्रयासों की सफलता पर खुश होती है, तो सुगति सौदेबाजी पर उतरते हैं-"आखिर कुछ तो बताओ। यह तो नदी में पैसा झोंकनेवाली बात हुई---हफ्ता ? महीना ? दो महीने ? छह महीने ? कोई तो टाइम शैड्यूल होना चाहिए!"[2] बाजारवाद में ग्राहक और क्रेता के बिच सौदा होता है। खर्च किए रूपयों का अपेक्षित परिणाम नही आता तो ग्राहक जबाबतलब करता है। सुगति जी का व्यवहार ऐसा ही स्वार्थी है। विश्वास की कमी और स्वार्थ भूमंडलीकरण की एक विशेषतः है। प्रस्तुत उपन्यास में भारतीय डॉक्टर और अस्पताल की सेवा पर अविश्वास दिखानेवाले धनाढ्यों की मानसिकता का चित्रण है। डॉ. काया अनुभवी डॉ. कुलश्रेष्ठ की सलाह मानती है और इच्छु के मन की मनोग्रंथियाँ दूर करती हैं। किंतु इच्छु की विमाता मृणाल जब इच्छु को बताती है कि उस पर प्रति महीना लगभग पंद्रह हजार, रुपये खर्च हो रहा है तब विश्वास टूटा इच्छु डॉ. काया को पिताजी के रुपये वापस देने की जिद करता है। डॉ. काया रुपये वापस करने का वादा करती है। डॉ. काया के आत्मीय व्यवहार तथा सुसंवाद के परिणामस्वरूप इच्छु बाते करने लगता है। विमाता मृणाल तथा बंगाली आया से शोषित इच्छु डॉ. काया के घर आता-जाता है। वह डॉ. काया की ओर आकर्षित होता है। इच्छु छोटे भाई विकास का डॉ. काया के प्रति का लगाव बर्दाश्त नहीं करता। इच्छु की विमाता मृणाल मतलबी है। मृणाल इच्छु से पींड छुड़ाने हेतु इच्छु और डॉ. काया के विवाह का प्रस्ताव डॉ. काया तक पहुँचाती है। अनपेक्षित प्रस्ताव नकारनेवाली डॉ. काया दिल्ली छोड़कर न्यूयॉर्क चली जाती है। निराश इच्छु बंबई के अस्पताल की छठी मंजिल से छलाँग लगाकर आत्महत्या करता है। अर्थात भूमंडलीकरण में व्यक्ति दूसरों का विचार ही नही कर रहा है। सामनेवाले की इच्छा की अपेक्षा अपना स्वार्थ महत्वपूर्ण माननेवाली पीढी जीवन से हारी नजर आती है।

प्रस्तुत उपन्यास में भूमंडलीकरण के युग में विवाह संस्था के ढाँचे पर हो रहे आघातों का चित्रण मिलता है। व्यक्ति और परिवार का रिश्ता नाभीय होता है। इस कारण ही व्यक्ति परिवार से अधिक लगाव रखता है। परिवार एक ऐसी संस्था है, जो व्यक्ति की मानसिक तृष्णा की परिपूर्ति करती है। इस कारण व्यक्ति परिवार के बिना अधूरापन महसूस करता है। किंतु जहाँ पारिवारिक सदस्यों में अर्थकेंद्रित एवं आपमतलबी व्यवहार दिखाई देता है,वहाँ टूटते परिवार एवं रिश्ते की समस्या परिलक्षित होती हैं। प्रस्तुत उपन्यास में चित्रित स्त्री डॉक्टर का पारिवारिक जीवन आपसी झगड़े, मारपीठ एवं अनबन के कारण अशांत परिलक्षित होता है। 'काया स्पर्श' की युवा महिला डॉक्टर ऋतु पारिवारिक विड़म्बनाओं में फँसती, उभरती एवं हलाहल होती है। अनाथ ऋतु को माता-पिता का सुख तो नहीं मिलता पर उसे ताई-ताऊ, छोटे भाई-भाभी तथा पहली पत्नी ने छोड़ा है यह पता होने पर भी विश्वास करके शादी किए पति से प्रेम की अपेक्षा प्रताड़ना एवं दु:ख ही मिलता है। काया के पति स्वराज तथा सास-ससुर डॉ. काया का शारीरिक एवं मानसिक शोषण करते हैं -"एक दिन उसने खर्च के लिए कुछ पैसे माँगे तो स्वराज ने अपने पालतू कुत्ते उस पर छोड़ दिए। काया गर्भवती थी। वह रोई तो स्वराज ने बंदुक निकाल ली और नली उसके पेट पर रखकर धमकाया। काया चीख मारकर बेहोश हो गई और उसका गर्भ गिरा।"[3] उक्त उद्धरण से अर्थकेंद्रित व्यवहार करनेवाले पति के कारण दूभर हुए डॉ. काया के पारिवारिक जीवन की त्रासदी विदित होती हैं। डॉ.काया के पति तथा सास-ससुर वहम रखते हैं कि डॉ. काया ने जायदाद के लिए शादी की है। डॉ. काया का छोटा भाई और भाभी काया के पति स्वराज के बातो में आकर काया को घर छोड़ने को मजबूर करते हैं। परिवार से टूटी काया मनोविज्ञान की ज्ञाता होने के बावजूद भी मानसिक द्वंद्व में फँसती है। इच्छु का केस सँभालकर वह अपने को सँभालने का प्रयास करती है; पर इच्छु के पिता का रवैय्या देखकर पुनश: बिखर जाती है। आदर्शवादी डॉक्टर बनने का संकल्प करनेवाली डॉ. काया व्यसन से दूर रहती है। किंतु आपमतलबी पति, सास, भाई, भाभी के दुर्व्यवहार से त्रस्त और रोगियों के रिश्तेदारों से ऊब चुकी डॉक्टर काया अमरिका के हैंड्रसन नामक व्यक्ति से शादी करती है और खुलेआम शराबपान करती है -"मगर घोर अचरज की बात तो यह थी कि वह होठों से सिगरेट लगाए बियर का पाइंट पकड़े खड़ी थी।"[4] उक्त उद्धरण से स्पष्ट है कि साइकलॉजिस्ट डॉक्टर काया अपने मन की रंजीश तथा तान-तनाव से मुक्ति पाने हेतु व्यसन करती है तथा अनमेल विवाह करती है। परिणामस्वरूप वह उन्मुक्त जिंदगी पंसद करती है।

Organised By	Rayat Shikshan Sanstha's Prof.Dr.N.D.Patil Mahavidyalaya,Malkapur(Perid)	ISSN 2349-638x Impact Factor 4.574

वर्तमान काल विज्ञान,तकनीकी एवं अनुसंधान का काल है। सेवाभाव तथा मानवतावाद का सूत्र पकड़कर जीवनयापन करने का इतिहास होनेवाले वैद्यकीय व्यवसाय में विज्ञान,तकनीकी ने क्रांति की है। स्वतंत्रतापूर्व काल की तुलना में भारतवर्ष में डॉक्टरों तथा अस्पतालों की तादायद बढ़ी है। वैद्यकीय व्यवसाय करनेवाले डॉक्टर उच्च-वर्ग में आते हैं। भारतीय समाज डॉक्टरों को सम्मान देता है। मात्र भूमंडलीकरण के इस युग में वैद्यकीय व्यवसाय सेवा का नहीं रहा है। वैद्यकीय शिक्षा दीक्षा पूर्ण होने के बाद डॉक्टरों को शपथ दी जाती है कि डॉक्टर की प्रथम प्राथमिकता रोगी है। किंतु आज मूल्य-विघटन के कुचक्र में फँसे वैद्यकीय व्यवसाय में आज पूँजी लगाओ और नोट गिनो का व्यापारी तत्व खुलेआम परिलक्षित होता है। इस कारण वैद्यकीय क्षेत्र में मानवतावाद से जुड़ा सेवाभाव का चित्र धूमिल और अर्थकेंद्रित सेवाभाव का फलक विस्तृत हो रहा है। 'काया स्पर्श' उपन्यास की साइकलॉजीस्ट युवा डॉ. काया मनोरोगी ईक्ष्वाकु उर्फ इच्छु का इलाज करने के लिए विविध प्रयोग करती हैं। डॉ. काया का इच्छु के साथ का मानवतावादी व्यवहार चिकित्सा पद्धति का एक अंग है। अपितु प्रति घंटा अस्सी रुपये की फीस लेनेवाली डॉ. काया का व्यवहार अर्थकेंद्रित ही है। इच्छु की सौतेली माँ का कथन -"तुम समझती हो, तुम पर वह औरत कृपा करके यहाँ आती है, या तरस खा कर ?अस्सी रुपय फी घंटा चार्ज करती है।"[५] डॉ. काया इच्छु के साथ खेल खेलने की जिम्मेदारी अपनी दोस्त श्यामला और कर्नल गुप्ता पर सौंपाती है और बदले में इच्छु के पिताजी से उन्हें प्रति महीना एक-एक हजार रुपए देती है। इससे स्पष्ट होता है कि डॉ.काया रोगी की सेवा अधिकाधिक फीस लेकर करती है।

भारतीय जन-जीवन पर उपभोक्तावादी संस्कृति के अच्छे-बुरे परिणाम हुए हैं। भारतीय संस्कृति और उपभोक्तावादी संस्कृति में अंतर है। उपभोक्तावादी संस्कृति व्यक्तिगत स्वतंत्रता को सर्वोपरि मानकर ऐशोरामी जीवनयापन को ही सुखकर मानती है, तो भारतीय संस्कृति व्यक्ति की स्वतंत्रता परिवार, समाज, और देशहित में सीमित एवं संयमित मानती है। तुलना में वर्तमान काल का बौद्धिक वर्ग उपभोक्तावादी संस्कृति में अधिक फँसा है। वह नैतिक अनैतिक का विचार नहीं करता। विज्ञान शाखा के अंतर्गत आनेवाला शास्त्र वैद्यकशास्त्र है। विभिन्न रोगों के इलाज हेतु तथा परिणामकारक दवा-दारू एवं चिकित्सा पद्धति में सुलभता लाने हेतु वैद्यकीय क्षेत्र में विभिन्न प्रकार का अनुसुंधान चलता है। डॉक्टरों से यह अपेक्षा की जाती है कि वे केवल पदवीग्रहण के समय तक प्राप्त किए ज्ञान के बूते चिकित्सा करने के बदले कालसापेक्ष विकसित हुई पद्धतियों एवं दवा-दारू का प्रयोग कर मरीजों की सेवा करे। किंतु कई डॉक्टर आधुनिक वैद्यकीय तकनीकी से संपृक्त नहीं रहते । वे अध्ययन एवं अनुसंधान को फुहड़ मानकर वैद्यकीय ज्ञान से संपृक्त रहने की अपेक्षा पद, पैसा, सम्मान एवं नारी-देह में उलझते हैं। कई डॉक्टर अनुसंधान एवं आधुनिक ज्ञान की आवश्यकता ही नकारते हैं। विशेषतः डॉक्टर सेवा की अपेक्षा धन बटोरते हैं। कुछ चुनिंदा कर्तव्यकठोर डॉक्टर वैद्यकीय क्षेत्र में आई नई तकनीकी एवं अनुसंधान से जुड़े रहते हैं। 'काया स्पर्श' उपन्यास में आधुनिक वैद्यकशास्त्र का ज्ञान न होनेवाले मनोरोगी डॉक्टर इच्छु पर मेगाविटामिन थैरपी तथा ई.सी.टी. करवाते हैं। इच्छु के पिता हृदय सुगति जब डॉ. काया को संबंधित इलाज करने के बाद भी अपेक्षित लाभ न होने की बात बताते हैं तब डॉ. काया संबंधित इलाज पद्धति करनेवाले डॉक्टरों के अज्ञान पर चकित होती है -"इनमें से अनेक दवाइयों का प्रयोग घोर मायूसी को दूर करने के लिए या उत्तेजित मरीजों को शांत करने के निमित्त किया जाता था। थोराजीन जैसी चीज़ तो व्यक्ति को ढुलमुल बना देती है कि वह अवश्य निःसहाय-सा पड़ा रहता है।"[६] इससे विदित होता है कि आज के भूमंडलीकरण के युग में फँसाना आम बात हो गई है। आधुनिक ज्ञान से असंपृक्त रहनेवाले डॉक्टर यथायोग्य इलाज-पद्धति का प्रयोग नहीं करते। कई डॉक्टर नई तकनीकी जानते नहीं हैं, पर कहे सूने ज्ञान के आधार पर नई चिकित्सा पद्धति का प्रयोग करते हैं; जिसके परिणाम रोगी के शरीर पर होते हैं।

निष्कर्ष :-

हर दायरे से ऊपर उठकर मनुष्य का आर्थिक, सामाजिक तथा सांस्कृतिक आदान-प्रदान वैश्वीकता का प्रमुख स्वर है। विश्ववाजारवाद का स्वीकार कर हर संभव अन्य देशों की अर्थव्यवस्था से जूड़ने की प्रक्रिया भूमंडलीकरण है। भूमंडलीकरण में अन्य देशों से जुड़ने के लाभ कम हैं और हानियाँ अधिक हैं। हानि का सुस्पष्ट स्वरूप अधिकतर मूल्य विघटन के स्तर पर दृष्टिगोचर होता है। भौतिक सुख के चक्कर में मोहभंगित और पथभ्रष्ट पीढी भूमंडलीकरण की देन है। 'काया स्पर्श' उपन्यास में

अमीरों का अर्थकेंद्रित व्यवहार और भूमंडलीकरण के वैद्यकीय व्यवसाय पर हुए परिणामों का चित्रण मिलता है। अमीरों की रूपयों की दुनिया में प्रेम शेष नहीं रहा है। भूमंडलीकरण में व्यक्ति दूसरों का विचार ही नही कर रहा है। सामनेवाले की इच्छा की अपेक्षा अपना स्वार्थ महत्वपूर्ण माननेवाले लोग जीवन से हारे हुए नजर आते हैं। प्रस्तुत उपन्यास में भूमंडलीकरण के युग में विवाह संस्था के ढाँचे पर हो रहे आघातों का चित्रण मिलता है। वर्तमान काल का बौद्धिक वर्ग उपभोक्तावादी संस्कृति में अधिक फँसा हुआ तथा नैतिक अनैतिकता का विचार न करता हुआ परिलक्षित होता है। वैद्यकीय क्षेत्र में मानवतावाद से जुड़ा सेवाभाव का चित्र धूमिल और अर्थकेंद्रित व्यवहार का फलक विस्तृत नजर आता है।

संदर्भ संकेत -

१. सं. डॉ. ललिता राठोड, २१वी शती का वैश्वीक हिंदी साहित्य, (विद्या प्रकाशन,कानपुर,प्रथम संस्करण २०१२),पृ. १३१
२. सं. डॉ. शैलेजा भारद्वाज,हिंदी साहित्य में युगीन बोध, (चिंतन प्रकाशन,कानपुर,प्रथम संस्करण २०११),पृ. ५४१
३. डॉ.द्रोणवीर कोहली, कार्या स्पर्श, (दिल्ली, ज्ञान-विज्ञान प्रकाशन, प्रयुक्त संस्करण २०१२), पृ.४६
४. वही, पृ.१२४
५. वही, पृ.१२८
६. वही,पृ.१०३
७. वही,पृ.३०